सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन "अज्ञेय" (7 मार्च, 1911 - 4 अप्रैल, 1987)

"अज्ञेय" 20वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य के नवोदय के सूत्रधार हैं। कवि और गद्यकार दोनों ही रूपों में उन्होंने नयी दिशाओं का आविष्कार और परिष्कार किया। उन्होंने कविता को छायावादी अतिशय भावुकता और प्रगतिवाद एकांगी मानसिकता से अलग कर एक नई काव्य भूमि की ओर ले जाने का बीड़ा उठाया। "अज्ञेय" स्वभाव से विद्रोही थे। उन्होंने अपने जीवन को अपने ढंग से, जगह बदल-बदल कर तरह-तरह से जाना और जीया। इससे उत्पन्न परितोष को कविता में उन्होंने इस तरह व्यक्त किया – "मैं मरूंगा सुखी/ क्योंकि तुमने जो जीवन दिया था/ उससे मैं निर्विकल्प खेला हूं/ खुले हाथों से मैंने उसे वारा है/ मैं मरूंगा सुखी/ मैंने जीवन की धज्जियाँ उड़ाई हैं।" अज्ञेय जी के लेखन के केंद्र में निहित व्यक्ति मुक्त है, मूल्य सर्जक है और जिम्मेदारी के एहसास से भरा हुआ भी। दूसरे तक मूल्यबोध को पहुंचाना अज्ञेय साहित्यकार का दायित्व मानते हैं। यही उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता है। **उनकी प्रमुख रचनाएं हैं:** - कितनी नावों में कितनी बार, भग्नदूत, चिन्ता, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, विपथगा, परम्परा, नदी के द्वीप, सबरंग और कुछ राग, लिखी कागद कोरे तथा आलवाल।